FOR. P.G. SEM-2
CC-6, UNIT-II

RISE OF MUSSOLINI AND FASCISM
(PART-1)

Page No.:
Date:
YOUVA

मुसोलिनी का उदय एवं फासीवाद (भाग-1)

प्रथम विश्वयुद्ध ने आधुनिक यूरोप की समस्त विचारधाराओं को संकट में लाकर खड़ा कर दिया तथा उसके पश्चात् विश्व के कई देशों में अलग-अलग किस्म की सर्वसत्तावादी (Totalitarian) सरकारों की स्थापना हुई जिन्होंने मुख्यतः द्वितीय विश्वयुद्ध तक अपने पतन तक सर्वत्र अराजकता एवं अशांति का साम्राज्य कायम रखा। इसी क्रम में इटली में मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवाद का उदय हुआ।

अंग्रेजी शब्द Fascism (फासीवाद) लैटिन शब्द फासियो से बना है जिसका अर्थ होता है – बंडल या लकड़ियों का बंधा हुआ ढेर, एक ऐसा बंडल जिसके बीच में ऊपर निकला हुआ कुल्हाड़ा होता था। यह लकड़ियों का बंडल लाल फीते से बँधा होता था जो राजकीय अधिकार का चिन्ह या प्रतीक होता था जिसे प्राचीन रोमन साम्राज्य के प्राधिकार और शक्ति का चिन्ह माना जाता था। बेनेटो मुसोलिनी का दल इस 'फासेस' शब्द के आधार पर 'फासिस्ट दल' कहलाया और 'फासेस' को दल के प्रतीक या चिन्ह के रूप में स्वीकार किया।

'फासीवाद' कोई सुस्पष्ट पारिभाषिक विचारधारा नहीं है तथा देश काल एवं परिस्थितियों के मुताबिक इसमें पर्याप्त बदलाव देखने में आता है। मोटे तौर पर यह व्यक्तिगत पूंजीवाद, अन्तर्राष्ट्रीय समाजवाद, उदारवाद एवं लोकतन्त्रवाद का विरोध करता है। इसके लिए वह अनुदारवादियों से भिन्न तरीका अपनाता है। धार्मिक विचारधारा अनुदार सत्तावाद का आधार थी जबकि फासीवाद ने डार्विन के जैव शक्तिवाद (Survival of the fittest), बुद्धि-विरोधवाद और धर्मनिरपेक्ष नव आदर्शवाद के संश्लेष के रूप में अपने को तैयार किया। फासीवाद समग्र राष्ट्रवाद में विश्वास रखता है जिसका तात्पर्य है – अन्य सभी प्रकार के मानवीय पहचानों को पीछे छोड़ते हुये राष्ट्र की सौहार्दपूर्ण सामुदिकता में विश्वास। यह राज्य सर्वोपरि एवं सर्वसत्तावादी होता है। प्रायः फासीवादी राज्यों में दैव्य शक्ति एवं हिंसा का गौरवगान किया जाता है।

इटली में मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवाद का उदय हुआ। इसके उदय में प्रथम विश्वयुद्धजनित समस्याएँ

Scanned with CamScanner

एवं पेरिस शांति सम्मेलन के निर्णय, देश की सोचनीय आर्थिक दशा, साम्यवाद का प्रचार आदि जैसे कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

1. पेरिस शांति सम्मेलन और इटली के साथ विश्वासघात

इटली ने प्रथम विश्वयुद्ध में छिड़कर युद्ध प्रारम्भ के एक साल के पश्चात् संभावित विजेता के पक्ष में प्रादेशिक लाभ प्राप्ति की आकांक्षा से की थी। किंतु शांति सम्मेलन में मित्रराष्ट्र ब्रिटेन और फ्रांस ने इटली के साथ विश्वासघात किया और अपने वायदे से मुकर गये। वस्तुत: 1882 में इटली आस्ट्रिया तथा जर्मनी के साथ 'त्रिराष्ट्र संधि' से बंध गया था परंतु आस्ट्रिया एवं जर्मनी दोनों ही उसके विरोधी थे। वे इटली के साम्राज्य विस्तार को पसंद नहीं करते थे जबकि इटली अपने इयलियन भाषा-भाषी प्रदेश को आस्ट्रिया से मुक्त कराना चाहता था तथा अफ्रीका में एक विशाल साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। इसके आस्ट्रिया के साथ इसका संघर्ष बना रहता था तथा जर्मनी आस्ट्रिया की सहायता करता था। कुल मिलाकर इटली इस संधि से असंतुष्ट था। इसी का लाभ उठाकर मित्रराष्ट्रों के साथ इसने 1915 में लंदन की गुप्त संधि की। इसके तहत इटली को यूरोप का एक बहुत बड़ा भाग, फ्यूम के अतिरिक्त डालमेशिया के तटीय क्षेत्र, अलबानिया तथा अफ्रीका के जर्मन उपनिवेश दिये जाने थे।

युद्ध में इटली की मानवीय तथा आर्थिक क्षति काफी हुई और जब पेरिस के शांति सम्मेलन में प्रादेशिक लाभ प्राप्ति का समय आया तो विल्सन के आदर्शवाद की आड़ में मित्र देशों ने उसकी मांगों पर ध्यान नहीं दिया। इटली को केवल टेन्टिनो, डालमेशिया के तट का कुछ भाग एवं टिरोल दिया गया। उसे अलबानिया तथा फ्यूम (एड्रियाटिक सागर स्थित बंदरगाह) नहीं दिया गया। इतना ही नहीं अफ्रीका के जर्मन उपनिवेश ब्रिटेन तथा फ्रांस ने मिलकर बांट लिये। इस तरह इटली की भूमध्यसागरीय प्रभुत्व की आकांक्षा तथा अफ्रीका में साम्राज्यविस्तार की महत्वकांक्षा अतृप्त रह गयी। इटली की विफलता पर मुसोलिनी की टिप्पणी थी — उपनिवेशों की शानदार दावत में इटली को कुछ भी नहीं मिला।" इटली में सर्वत्र कहा जाने लगा कि इटली के साथ विश्वासघात हुआ है, वह युद्ध में जीतकर भी हार गया है। जनता इटली के जनतंत्र से नफरत करने लगी थी जिसके

Scanned with CamScanner

फासीवाद के उदय को प्रेरित किया।

2. जन असंतोष :-

पेरिस शांति सम्मेलन से वांछित लाभ न पाने के कारण इटली में जन-आक्रोश व्याप्त हो चला। लोगों ने इसके लिए गृह-सरकार को दोषी ठहराया। उनका कहना था कि यदि सरकार अपनी सैन्य शक्ति में वृद्धि करती और जोरदार शब्दों में अपनी मांग को शांति सम्मेलन में रखती तो मित्रराष्ट्र उनको इस प्रकार कभी धोखा नहीं दे सकते थे। गृह-सरकार ने गत युद्ध के गद्दार सैनिकों के विरुद्ध मुकदमे चला कर असंतोष में और भी वृद्धि कर दी। फलतः जनतात्मक शासन प्रणाली बहुत बदनाम हो गई तथा लोग वैकल्पिक शासन प्रणाली की खोज करने लगे।

3. युद्धोत्तर आर्थिक दुर्दशा :-

प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लेने से इटली को व्यापक जन-धन की हानि हुई। इटली के लगभग 6·5 लाख लोग मारे गये, 10 लाख से अधिक घायल हुये तथा उसके करीब 15 अरब डॉलर के बराबर सम्पति नष्ट हुई इटली पर राष्ट्रीय ऋण का बहुत भार बढ़ गया, उद्योग एवं व्यापार अव्यवस्थित हो गया, वस्तुओं के मूल्य बेतहशा बढ़े, इटली की मुद्रा का मूल्य 70% कम हो गया। मजदूर, सैनिक सभी वर्गों में असंतोष व्याप्त था इस अवसर पर देश को एक मसीहा की तलाश थी और वह मुसोलिनी के रूप में मिला जिसने जनता को रोम के खोये गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा का वायदा किया।

4. राष्ट्रवादियों में असंतोष :-

19वीं सदी में यूरोप का प्रायः प्रत्येक देश अपने आर्थिक हितों की पूर्ति तथा गौरव की वृद्धि के लिए साम्राज्य विस्तार का प्रयास कर रहा था। इसी कोशिश में इटली ने ट्यूनिस पर अधिकार करना चाहा परन्तु 1881 में जर्मनी की प्रेरणा से फ्रांस ने अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् इटली ने एबीसीनिया पर आधिपत्य की कोशिश की परंतु एबीसीनिया ने 1896 में "अडोवा के युद्ध" में इटली को पराजित कर दिया। प्रथम विश्वयुद्ध में भागीदारी के फलस्वरूप भी इटली को कुछ भी प्राप्त नहीं हो सका। अतः उन्हें एक ऐसी सरकार की जरूरत थी जो उनके राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति कर सके तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में इटली को सम्मानजनक स्थान दिला सके। मुसोलिनी का फासिस्ट दल इस आकांक्षा की पूर्ति करने में सक्षम था।

5. साम्यवाद का प्रसार :-

Scanned with CamScanner

युद्ध पश्चात की आर्थिक हताशा एवं अराजकता इटली में साम्यवाद को हवा दे रही थी। उन्होंने जन असंतोष का लाभ उठाया और सरकार के विरुद्ध सीधी कारवाई करके देश के अंदर अराजकता का वातावरण पैदा कर दिया था। इटली के साम्यवादी रूसी बोलशेविकों की भाँति किसानों और मजदूरों के सहयोग से क्रांति कर इटली में सर्वहारा शासन की स्थापना की बात कर रहे थे। ऐसे में साम्यवाद विरोधी तत्वों – जमींदारों तथा पूँजीपतियों- ने फासीवाद को समर्थन किया।

6. हीगल के सिद्धांत का प्रचार :-

जर्मनी का हीगल एक उग्र विचारक था। वह राज्य को 'विश्वात्मा' अर्थात् ईश्वर का पार्थिव रूप मानता था, इसीलिए वह मानता था कि राज्य कभी गलती नहीं कर सकता। उसके अनुसार व्यक्ति का महत्व गौण है और व्यक्ति राज्य के आदेशों का पालन करके ही अपनी उन्नति कर सकता है। उसका यह भी कहना था कि नागरिक एवं राज्य के अधिकारों के मध्य कभी संघर्ष नहीं हो सकता क्योंकि व्यक्ति को वही अधिकार मिलते हैं जिसे राज्य प्रदान करता है। इसप्रकार हीगल के चिंतन पद्धति में राज्य ही सर्वोपरि है। हीगल के इस दर्शन का जेंटिल (Gentile) तथा प्रेजोलीन (Prezzoline) नामक विद्वान इटली में खूब प्रचार कर रहे थे। फासिस्ट दल भी इसी सिद्धांत के आलोक में राज्य को तथा इटली को ही प्रमुख मानते थे व्यक्ति को नहीं।

7. समाज के सभी वर्गों का समर्थन :

इटली के सभी वर्ग तत्कालीन परिस्थितियों से असंतुष्ट थे और अपनी समस्याओं का निराकरण मुसोलिनी के फासिस्ट दल में देख रहे थे। पूँजीपति और मिल-मालिक, हड़ताल तथा श्रमिकों की बढ़ती शक्ति से भयभीत थे। मध्यवर्ग तत्कालीन शासन में असुरक्षा से ग्रस्त था। सैन्यवादी पराजय और राजनीतिज्ञों की अयोग्यता से पीड़ित थे, जमींदारों को कृषक संघों एवं भूमि के पुनर्वितरण से अनेक प्रकार की आशंकाएँ थी। राष्ट्रवादी राष्ट्रीय अपमान और आघात से परेशान थे। मुसोलिनी ने सभी समस्याओं के हल का वचन दिया। अतः सभी वर्गों ने उसका समर्थन किया।

[क्रमशः जारी]

Scanned with CamScanner